एलिम्को द्वारा सहायक उपकरण वितरण कार्यक्रम में माननीय स्पीकर महोदय का सम्बोधन

---

1. सांगोद और कनवास के सभी लोगों को तथा कोटा-बूंदी संसदीय क्षेत्र के सभी निवासियों को मेरा नमस्कार।

2. कोई भी सभ्य और संस्कारित समाज वह होता है जो अपने बुजुर्गों और सभी वर्ग, सभी समूहों का सम्मान करें। अपने घर-परिवार और समाज के वरिष्ठ जनों तथा दिव्यांग जनों का सहयोग हमारी ज़िम्मेदारी बनती है। वृद्धावस्था में सामान्यतः हम देखते हैं कि शरीर थोड़ा कमजोर हो जाता है। ऐसे समय पर सहायक अंग यानी सुनने के लिए कान की मशीन, साइकिल, लाठी, बैसाखी, वॉकर, चश्मे.... ये उपकरण ज़रूरतमन्दव्यक्ति के लिए बड़े उपयोगी होते हैं।

3. वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांग जनों के लिए सहायक उपकरण वितरण कार्यक्रम में मैं पिछले कई वर्षों से शामिल होता रहा हूँ। इस कार्यक्रम में शामिल होकर मुझे बड़ा संतोष होता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि हम अपने समाज के सभी लोगों को सामाजिक सुरक्षा दे पा रहे हैं।

4. दुनिया की कुल आबादी का पाँचवा हिस्सा भारत में है। ऐसे में स्वाभाविक है कि वृद्ध लोग भी बड़ी संख्या में हमारे देश में हैं। देश की एक बड़ी आबादी का जीवन हम सुगम बना पाए, इसके लिए जब हम काम करते हैं, तो यह बहुत सार्थक और उपयोगी होता है।

5. भारत संस्कारों का देश है। घर-परिवारों के साथ ही समाज और देश के स्तर पर भी हम अपने बुजुर्गों और दिव्यांग भाइयों-बहनों के लिए काम करते हैं। बुजुर्गों और दिव्यांग जनों की सामाजिक सुरक्षा का संकल्प हमारे देश और राज्यों की सभी सरकारें निभाती रही हैं।

6. हमारे संविधान के अनुच्छेद 43 में भी देश के विभिन्न वर्गों के लिए सामाजिक सुरक्षा के लिए निर्देश दिए गए हैं। किसी भी देश की सरकार का यह परम कर्तव्य होता है कि वह अपने कमज़ोर वर्गों की समस्याओंका समाधान करें। यह सुखद है कि हमारे देश की सरकारों ने इस दिशा में काम किया है।

7. हमारे यहाँ जब भी कोई सरकारी स्कीम आती है तो उसमें दिव्यांगों, महिलाओं और बुजुर्गों का विशेष ध्यान रखा जाता है। उनके लिए प्रावधान किए जाते हैं। सरकार श्रमिक कार्ड बनाती है, इसका भी यही उद्देश्य है कि श्रमिक भाई-बहनों को सुरक्षा मिले। सरकार जब बुजुर्गों के लिए, किसानों के लिए, दिव्यांग भाई-बहनों के लिए पेंशन का प्रबंध करती है तो इसका भी यहीं अर्थ है कि सामाजिक सुरक्षा की दिशा में काम हो रहा है।

8. ‘राष्ट्रीय वयोश्री योजना’ और ‘एडिप’ योजना के अंतर्गत पिछले कई वर्षों से भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (ALIMCO) बुजुर्गों और दिव्यांगों के लिए सहायक उपकरण तैयार कर रहे हैं।

9. सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अधीन एलिम्को पिछले करीब 5 दशकों से (1976 से) सहायक अंगों का निर्माण कार्य कर रही है। आपने इन वर्षों में लगातार काम करते हुए सहायक उपकरणों को दिव्यांग जनों के अधिक से अधिक अनुकूल बनाने के प्रयास किए हैं। इससे अनेक लोगों का जीवन उन्नत हुआ है, उनमें आत्मविश्वास का संचार हुआ है।

10. इन उपकरणों से जीवन पूरी तरह सामान्य तो नहीं हो जाता, लेकिन एक बड़ा सहयोग ज़रूर मिलता है।पिछले इन वर्षों में इस तरह कैम्प लगाकर कोटा-बूँदी संसदीय क्षेत्र में 3200 से अधिक लोगों को सहायक उपकरण वितरण कर उनको लाभ दिया गया है। आज भी इस कार्यक्रम में 360 वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांग भाई-बहनों को सहायक उपकरण वितरण कर सहायता की जाएगी।

11. दिल्ली में मेरी बड़ी ज़िम्मेदारी रहती है, लेकिन इस बीच समय-समय पर मैं कोटा आता रहता हूँ। हर बार जब आता हूँ तो जनसुनवाई और जनसमस्याओं के समाधान में लगा रहता हूँ। कई तरह की व्यस्तताऐं रहती हैं, लेकिन क्षेत्र के वरिष्ठ जनों और दिव्यांग जनों को संबल देने के लिए इस कार्यक्रम के लिए पहले से ही समय निर्धारित कर लेता हूँ। इस कार्यक्रम में मैं देखता हूँ कि लाभान्वित लोगों के चेहरे पर मुस्कान आ जाती है।

12. जब हमारे दिव्यांग भाई-बहन को ट्राई साइकिल मिलती है, बुजुर्ग माताजी को नजर का चश्मा, छड़ी, व्हीलचेयर मिलती है; तो उन्हें एक अलग ही अनुभव होता है। उन्हें लगता है कि हमारे बारे में भी सोचा जाता है। मुझे व्यक्तिगत तौर पर आप लोगों के बीच आने से अच्छा अनुभव होता है। मैं आप लोगों से बात करता हूँ तो मालूम होता है कि ये सहायक अंग आपके लिए बड़े उपयोगी होने वाले हैं।

13. भारतीय संस्कृति में बड़े-बुजुर्गों का सम्मान और आदर करना सिखाया गया है। मगर बदलते समय में हम देखते हैं कि हमारे समाज में बहुत से बुजुर्गों के साथ अच्छा बर्ताव नहीं होता। अपने घर-परिवार में ही उन्हें अलग कर दिया जाता है। वृद्धावस्था वह समय होता है जब वृद्ध व्यक्ति को किसी सहारे की सबसे ज़्यादा जरूरत होती है। वृद्धावस्था में व्यक्ति भावनात्मक रूप से तो भावुक होता ही है, शारीरिक रूप से भी कमज़ोर होते हैं। कम दिखाई देना, चलते समय सहारे की जरूरत पड़ने लगती है। ऐसे समय पर सहायक उपकरणों से उन्हें बड़ा संबल मिलता है।

14. हम अक्सर बोलते हैं कि भारत युवाओं का देश है। मगर ये भी सत्य है कि हमारे लिए बुजुर्गों का महत्व भी कम नहीं है। वरिष्ठ जन हमारे घर-परिवार और समाज को सही दिशा देने का काम करते हैं। उनको जीवन

का बड़ा अनुभव होता है। ऐसे में किसी भी मुश्किल परिस्थिति में उनकी राय बड़ी महत्वपूर्ण हो जाती है। कोई व्यक्ति नई दुकान खोलने जा रहा हो, नया कामकाज शुरू करने जा रहा हो, कोई कोर्स करने जा रहा हो, कहीं यात्रा पर जा रहा हो, जीवन का कोई नया अनुभव ले रहा हो, ऐसे वक़्त पर हम अगर घर और समाज के बड़े-बुजुर्गों से बात करें, उन्हें अपनी स्थिति बताएं, तो हम देखते हैं कि उनके ज्ञान, उनके सुझाव और राय से हमारा काम आसान हो जाता है। इसका कारण है कि वृद्ध जनों को उन कार्यों का पहले अनुभव है। उन्होंने पहले वो स्थिति देखी है, इसलिए वो हमें ऐसा रास्ता बताते हैं, जो सबसे सही होता है।

15. आप इस विषय को ऐसे समझी कि जब क्रिकेट में या किसी खेल में हमारी कोई टीम जीतती है तो उसमें टीम के कोच की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अच्छे नंबरों से जब विद्यार्थी किसी परीक्षा में पास हो जाते हैं, तो उसमें अनुभवी टीचर्स की भूमिका होती है। हमारे बड़े-बुजुर्ग इसी तरह अनुभव का खजाना है। जीवन की परीक्षा में पास होने के लिए उनका मार्गदर्शन ज़रूरी होता है।

16. इसी तरह आज इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में दिव्यांग भाई-बहन भी उपस्थित हैं। सहायक उपकरणों की मदद से जब आपकी नियमित दिनचर्या सुगम होती है, तब इस दिशा में सरकार और सभी के प्रयास सफ़ल होते हैं। दिव्यांग जनों के सशक्तिकरण के लिए सभी सरकारें योजनाएं चलाती हैं। शिक्षा में और कई नौकरियों में अवसर दिए जाते हैं।आपको इन अवसरों का लाभ उठाना चाहिए।

17. शिक्षा, विज्ञान और खेल सहित जीवन के कई क्षेत्रों में दिव्यांग जनों ने उल्लेखनीय कार्य किए हैं। कठिन शारीरिक चुनौती को पार कर अरुणिमा सिन्हा ने माउंट एवरेस्ट फतेह किया है, तो हम देख रहे हैं कि इन वर्षों में पैरालम्पिक खेलों में भी भारत के खिलाड़ी बड़ा शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। अवनी लेखरा, कृष्णा नागर जैसे हमारे स्टार खिलाड़ियों ने विश्व पटल पर भारत का नाम ऊँचा किया है।

18. हमारे दिव्यांग भाई-बहन किसी से कम नहीं होते, बल्कि सबसे बढ़ कर होते हैं। कठिन चुनौतियों को पारकर जब आप आगे बढ़ते हो तो इससे आम आदमी को उत्साह और प्रेरणा मिलती है। आपका मन बड़ा मजबूत होता है। आपकी हिम्मत अन्य लोगों से कई गुना ज़्यादा होती है।

19. आज इस कार्यक्रम में हमारे दिव्यांग भाई-बहनों को मैं नमस्कार करता हूँ। आपको बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। मैं एलिम्को की सराहना करता हूँ कि बढ़िया क्वालिटी के सहायक अंगों का निर्माण कर आपने अब तक लाखों जीवन को बदला है। आपकी तकनीक में आप आगे लगातार विकास करते रहें। जितना अधिक संभव हो सकें, हमारे दिव्यांग भाई-बहनों के लिए फ्रेंडली उपकरण का आप निर्माण करें, इसके लिए आपको मैं शुभकामनाएं देता हूँ।

20. मैं इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी बड़े-बुजुर्गों को नमस्कार करता हूँ। आपका आशीर्वाद और मार्गदर्शन हमेशा मिलता रहे।

धन्यवाद, जय हिन्द।